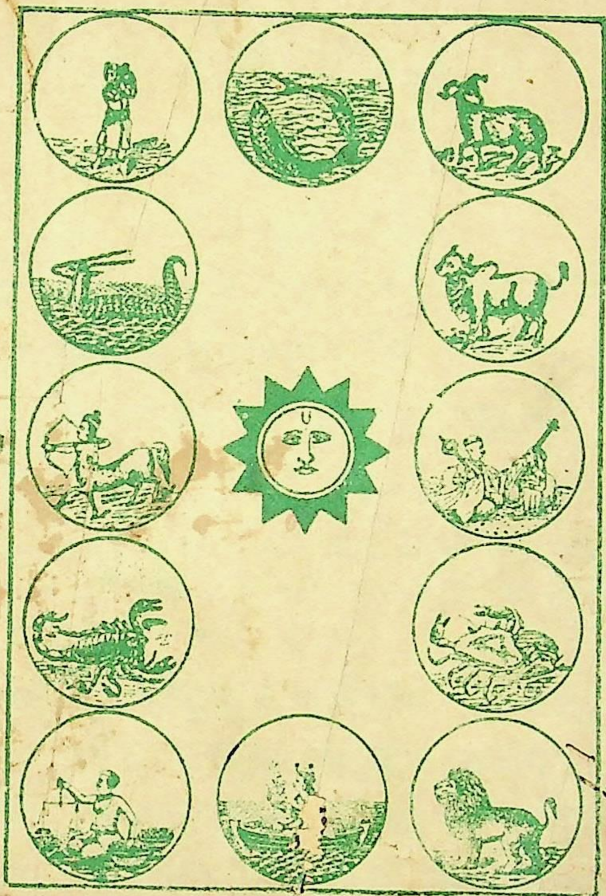
बृहद् होड़ा चक्र

भाषा टीका सहित



पं० सीताराम एण्ड संस, बुकसेलर, अलीगढ़।

❀ श्री गणेशाय नमः ❀

❀ बृहद् होड़ाचक्रम् ❀

अनुवादक—पं० रमेशचन्द्र भारद्वाज

भाषा टीका सहितम्

प्रणम्य भारती भक्त्या गणेशं च गजाननम् ।
समाहृत्यान्यग्रन्थेभ्यो होड़ाचक्रं विरच्यते ।१।

रवि, सोम, मङ्गल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, और शनिश्चर यह सात बार हैं ।।२।।

अर्थः—श्री सरस्वती देवी तथा हाथी के सदृश मुख वाले गणेश जी को भक्ति पूर्वक प्रणाम करके अनेक ग्रन्थों से संग्रह कर होड़ा-चक्र की रचना करता हूँ।

प्रतिपदा१, द्वितीया२, तृतीया३, चतुर्थी४, पञ्चमी५, षष्ठी६, सप्तमी७, अष्टमी८, नवमी९, दशमी१०, एकादशी११, द्वादशी१२, त्रयोदशी१३, चतुर्दशी१४, कृष्णपक्षे अमावस्या ३०।। शुक्लपक्षे पौर्णमासी१५ इस प्रकार १६ तिथियाँ होती हैं ।।३।।

चैत्र, बैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन (कुआर), कार्तिक, मार्गशीर्ष (अगहन), पौष, माघ, फाल्गुण—यह बारह मास १ वर्ष में होते हैं ॥४॥ वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर इतिऋतवः ॥५॥ अयने दक्षिणायनोत्तरायणे ॥६॥

मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुम्भ, मीन, इति द्वादश राशयः ॥७॥

अश्विनी, भरणी, कृतिका, रोहिणी मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वा फाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, चित्रा स्वाती विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, अभिजित, श्रवण, धनिष्ठा, शत-भिषा, पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराभाद्रपदा, रेवती इति अष्टविंशतिनक्षत्राणि ॥ ८ ॥

अर्थः—वसन्त, ग्रीष्म और वर्षा आदि ६ ऋतुएँ होती हैं। दक्षिणायन (१) उत्तरायण (२) यह दो अयन हैं।५।६। मेष, वृष और

मिथुन इत्यादि यह कुल १२ राशियाँ हैं ॥७॥ अश्वनी, भरणी इत्यादि २८ नक्षत्र हैं। किन्तु अभिजित नक्षत्र क्रम से वर्तमान नहीं रहता; इस लिए अत्र २७ ही नक्षत्र माने गए हैं ॥८॥

विष्कम्भ, प्रीति, आयुष्यमान् , सौभाग्य, शोभन, अतिगण्ड, सुकर्मा, धृति, शूल, गण्ड, वृद्धि, ध्रुव, व्याघात, हर्षण, वज्रसिद्धि व्यतिपात, वरीयान्, परिघा शिव, सिद्ध, साध्य, शुभ शुल्क ब्रह्मा, ऐन्द्र, वैधृति इति सप्तविंशति योगाः ॥९॥

अर्थः—विष्कम्भ, प्रीति इत्यादि यह २७ योग होते हैं ॥९॥

चू चे चो ला अश्विनी। ली लू ले लो भरणी। आ ई ऊ क कृत्तिका। ओ वा वी वू रोहिणी। वे वो का की मृगशिरा। कू घ ङ छ आर्द्रा। के को हा ही पुनर्वसु। हू हे हो डा पुष्य। डी डू डे डो अश्लेषा। मा मी मू मे मघा। मो टा टी टू पूर्वा फाल्गुनी। टे टो पा पी उत्तरा फाल्गुनी। पू ष ण ठ हस्त। पे पो रा री चित्रा। रू रे रोता स्वाती। ती तू त तो विशाखा। ना नीनू ने अनुराधा। नी या यी

यू ज्येष्ठा । ये यो भ भी मूल। भू धा फा ढापूर्वा-षाढ़ा । भे भो जा जी उत्तरा षाढ़ा। जू जे जो खा अभिजित । खी खू खे खो श्रवण । गा गी गू गे धनिष्ठा । गो सा सी सू शतभिषा । से सो दा दी पूर्वाभाद्रपदा । दू थ झ ञ उत्तरा भाद्रपदा । दे दो चा ची रेवती। इति जन्मनक्षत्राणि ॥१०॥

अर्थः—जिस मनुष्य के नाम में प्रथम अक्षर चू-चे-चो अथवा ला हो तो उसका अश्वनी नक्षत्र जानना चाहिये एवं इसी प्रकार अश्वनी नक्षत्र में उत्पन्न होने वाले व्यक्ति का नाम इन्हीं चार अक्षरों से होना चाहिये। यह चार अक्षर क्रम से चार चरणों के होते हैं। इसी भांति अन्य अक्षरों से अन्य नक्षत्र लिखे अनुसार समझिये। यही जन्म-नक्षत्र कहे जाते हैं ॥१०॥

अथ चन्द्र विचारः—

अश्विनी भरणी कृत्तिकापादेमेषः १,कृत्तिकाया स्त्रयः पादा रोहिणी मृगशिरार्द्धंवृषः २मृगशिरार्द्धं आर्द्रा पुनर्वसुपादत्रयं मिथुनः ३पुनर्वसुपादमेकं पुष्यश्लेषान्तं कर्कः ४,मघा चपूर्वाफाल्गुनीउत्तरा पादेसिंहः ५,उत्तरायास्त्रयः पादाहस्तचित्रार्द्धंकन्या

६, चित्रार्द्धं स्वाती विशाखापादत्रयं तुला ७, विशाखा पादमेकं अनुराधाज्येष्ठान्ते वृश्चिकः ८, मूलं च पूर्वाषाढ़ा उत्तरापादे धनुः ९. उत्तरायास्त्रयः पादा श्रवण धनिष्ठार्द्धं मकरः १०, धनिष्ठार्द्ध शतभिषापूर्वाभाद्रपादत्रयं कुम्भः ११, पूर्वाभाद्रपादमेकं उत्तराभाद्रेवत्यंते मीनः १२, इतिचन्द्राशिः। पूर्व, आग्नेय, दक्षिण नैऋत्य पश्चिम, वायव्य, उत्तर ऐशान्य इति दिशाः।

अर्थः—अश्वनी, भरणी और कृत्तिका इन के एक चरण में मेष राशि का चन्द्रमा वास करता है। कृत्तिका के तीन चरण, रोहिणी के सम्पूर्ण और मृगशिर के आधे तक वृष का चन्द्रमा वास करता है। सूर्यादि कुल नवग्रह सभी नक्षत्र पर इसी प्रकार रहते हैं, परन्तु वे दिन विशेष तक ही वास करते हैं; उनकी संख्या आगे लिखी गई है। इसी तरह श्लोकानुसार सब राशियों पर चन्द्रमा राशि विचार समाप्त हुआ।

पूर्व, आग्नेय और दक्षिण आदि आठ दिशाएं हैं।

शनौ चन्द्रे त्यजेत्पूर्वं दक्षिणंच दिशं गुरौ।
सूर्ये शुक्रे पश्चिमायां बुधे भौमेतथोत्तरे ॥इति॥

अथ दिक्शूलः—

अर्थः—शनिश्चर और सोमवार को पूर्व दिशा में; बृहस्पतिवार

को दक्षिण में; रविवार, शुक्रवार को पश्चिम में और बुधवार मंगलवार को उत्तर दिशा में गमन नहीं करना चाहिये ।

अथ चन्द्रवासस्थज्ञानम्—

मेषे च सिंहे धनपूर्व भागे वृषे च कन्यामकरे च याम्ये युग्मेतुलायां च घटेप्रतीच्यां कर्कालि-मीनेदिशि चोत्तरस्याम् ॥ १ ॥ इति ॥ सम्मुखे अर्थ लाभाय दक्षिणे सुखसंपदः ॥ पृष्ठतोमरणं चैववामेचन्द्रे धनक्षयः ॥ १ ॥

अर्थः—मेष, सिंह, धन राशियों में पूर्व दिशा में, वृष, कन्या, मकर राशियों में दक्षिण दिशा में, मिथुन, तुला, कुम्भ राशियों में पश्चिम में, एवं कर्क-वृश्चिक, मीन राशियों में उत्तर दिशा में चन्द्रमा का वास जानना चाहिये ॥१॥

यदि चन्द्रमा सामने हो तो सुख-सम्पत्ति की प्राप्ति, पीठ पीछे होने से मृत्युकारक और बाईं ओर होने से धन का नाश करता है ॥२॥

अथ योगिनीवास ज्ञानम्

प्रति पत्सु नवम्यां च पूर्वस्यां दिशि योगिनी ।
अग्निकोणे तृतीयाया मेकादश्यां तुसा स्मृता ॥३॥
त्रयोदश्यां च पंचम्यां दक्षिणस्यां शिवप्रिया ।
द्वादश्यां च चतुर्थ्यां च नैऋत्यांयोगिनीस्मृता ॥४॥

चतुर्दश्यां च षष्ठयां च पश्चिमायां च योगिनी।
पौर्णिमायां च सप्तम्यां वायुकोणे तु पार्वती ॥५॥
दशम्यां च द्वितीयायामुत्तरस्यां शिवा भवेत।
ऐशान्ये दर्शचाष्टम्यां योगिनी समुदाहृता ॥६॥
योगिनी सुखदा वामे पृष्ठे वांछितदायिनी।
दक्षिणे धनहंत्री च सम्मुखा मरणप्रदा ॥७॥

अर्थः-योगिनी पड़वा और नवमी को पूर्व दिशा में, तीज और एकादशी को अग्निकोण में वास करती है ॥ ३ ॥ त्रयोदशी पंचमी को दक्षिण में, द्वादशी और चौथ को नैऋत्य कोण में वास करती है ॥ ४ ॥ चतुर्दशी और षष्ठी को पश्चिम में तथा पूर्णिमा और सप्तमी को वायुकोण में वास करती है ॥ ५ ॥ दशमी और दौज को उत्तर में तथा अष्टमी और अमावस्या को ईशान कोण में वास करती है ॥ ६ ॥ योगिनी के वांई ओर होने से सुख का लाभ, पीठ पीछे होने से इच्छित वस्तु का लाभ, दांई ओर होने से धन का नाश, सामने होने से मृत्यु दायक होती है ॥ ७ ॥

अथ भद्रावासज्ञानम्—

दशम्यायां च तृतीयायां कृष्णपक्षे परे दले।
सप्तम्यां च चतुर्दश्यां विष्टिः पूर्वदले स्मृता ॥८॥
एकादश्यां चतुर्थ्यां च शुक्लपक्षे परे दले।
अष्टम्यां पौर्णिमायां च विष्टिः पूर्वदले स्मृता ॥९॥

अर्थः-कृष्ण-पक्ष में दशमी और तीज के पीछे के आधे भाग में, एवं सप्तमी और चतुर्दशी के प्रारम्भ के आधे भाग में भद्रा रहती है ॥ ८ ॥ शुक्ल-पक्ष की एकादशी एवं चतुर्दशी के पीछे के आधे भाग में, तथा अष्टमी और पूर्णमासी के प्रारम्भ के आधे भाग में भी भद्रा रहती है ॥ ६ ॥

मेष मकर वृष कर्क टस्वर्गे,
कन्या मिथुन तुला धनुनागे ।
कुम्भ मीन अलिकेसरि मर्त्यें,
विचरति भद्रा त्रिभुवन मध्ये ॥१०॥

अर्थः-भद्रा सदैव तीनों लोकों में विचरण करतीं हैं। मेष, मकर,वृष और कर्क राशियों के चन्द्रमा में स्वर्ग में, कन्या, मिथुन, तुला और धन राशियों के चन्द्रमा में पाताल लोक में, एवं कुम्भ मीन,वृश्चिक और सिंह राशियों के चन्द्रमा में मृत्यु- लोकमें ॥१०॥

स्वर्गे भद्रा शुभं कुर्यात् पाताले च धनागमम् ।
मृत्युलोके यदा भद्रा सर्वकार्य विनाशिनी ॥११॥

स्वर्ग में भद्रा का निवास होने से कार्य शुभ होता है, पाताल में होने से धन का लाभ मृत्युलोक में होने से सब कार्य नष्ट करती है ॥ ११ ॥

सम्मुखे मृत्युलोकस्था पाताले च अधोमुखी ।
ऊर्ध्वस्था स्वर्गगा भद्रा सन्मुखे मरणप्रदाः॥१२॥
पूर्वेभद्राचतुर्दश्या माग्नेय्यामष्टमीषु च ।

सप्तम्यां दक्षिणे चैव नैर्ऋत्यां पौर्णिमासु च ।१३।
पश्चिमायां चतुर्थ्यां च वायव्ये दशमी तिथौ ।
एकादश्यामुत्तरस्यामैशान्यां गिरिजानिथौ ।१४
भद्रामुखेषु यो याति क्रोशमेकं च नाधिकम् ।
पुरागमनं नास्ति नद्या हि सागराद्यथा ॥१५॥

अर्थः–यदि भद्रा का निवास मृत्युलोक में हो तो सन्मुख, पाताल लोक में हो तो अधो मुख एवं स्वर्ग लोक में हो तो ऊर्ध्व मुखी जाननी चाहिए। सन्मुख भद्रा सदैव मृत्यु कारक होती है ॥ १२ ॥ भद्रा चतुर्दशी को पूर्व दिशा में, अष्टमी को अग्नि कोण, सप्तमी का दक्षिण दिशा में और पूर्णमासी को नैऋत्य में वास करती है ॥ १३ ॥ भद्रा का निवास चतुर्थी को पश्चिम में दशमी को वायव्य में, तथा एकादशी को उत्तर में, तृतीया को ईशान में रहता है ॥१४॥ एक कोस से अधिक न होते हुए भी जो भद्रा के सन्मुख जाता है, उसका लौटना उसी प्रकार असम्भव है, जिस प्रकार नदी का समुद्र से ॥ १५ ॥

मेषसिंहवृषा रक्ता कुंजरो वाहनं भवेत् ।
युग्मकन्यानुः पीतमश्वसंवाहनं भवेत् ॥१६॥

नक्रलीनघटाः कृष्णामहिषो वाहनं भवेत् ।
अलिकर्कतुलाः श्वेतावृषभो वाहनं भवेत् ॥१७॥

रक्तचन्द्रे भवेद्युद्धं श्वेतचन्द्रे सुखी भवेत् ।
पीतचद्रे महालाभः कृष्णचन्द्रे महाभयम् ॥१८॥

अर्थः—संक्रान्ति की स्थिति यदि मेष, सिंह और वृष राशियों के चन्द्रमा में हो तो लाल वर्ण तथा हाथी वाहन होता है । मिथुन, कन्या और धन राशियों के चन्द्रमा में पीला वर्ण तथा घोड़ा वाहन होता है ॥ १६ ॥ मकर, कुम्भ और मीन राशियों के चन्द्रमा में वर्ण काला तथा वाहन भैंसा होता है, वृश्चिक, कर्क और तुला राशियों के चन्द्रमा में वर्ण सफेद तथा वाहन बैल होता है ॥ १७ ॥ चन्द्रमा का यदि वर्ण लाल हो तो युद्ध, सफेद हो तो सुख प्राप्ति, पीला, हो तो अत्यन्त लाभ दायक, काला हो तो अत्यन्त भय देने वाला होता है ॥ १८ ॥

अथ घात चन्द्र विचार :—

चन्द्रभूतग्रहा नेत्रा रसा दिग्वाह्निसागराः ।
वेदाःसिद्धिशिलार्काःस्युर्घातचन्द्रःक्रमान्नृणाम्॥

अर्थः—चन्द्रमा मेष, वृष आदि राशि वाले व्यक्तियों को १-५-६-२-६-१०-३-७-४-८-११-१२ क्रम-चद्र घातक सिद्ध होते हैं, जिस प्रकार मेष को १, वृष को ५, मिथुन को ६ चन्द्रमा घातक होते हैं । इसी तरह कुल राशियों में चन्द्रमा को घातक समझना चाहिए ॥१६॥

रोगे मृत्युरणे भंगंयात्राकाले तु बंधनम् ।
विवाहे विधवा नारी घातचन्द्र फलं त्विदम् ॥२०

अर्थः—यदि घातक चन्द्रमा रोग में हो तो मृत्यु कारक, युद्ध

में हो तो हार, यात्रा के समय में हो तो रुकावट, विवाह में हो तो स्त्री का विधवा होना, इस प्रकार यह घात चन्द्रमा का फल है ॥२०॥

ग्रहों की भुक्तसंख्या वर्णनम्—

मासं शुक्रो बुधःसुर्यः सार्द्धमासं महीसुतः ।
गुरुरब्दं तमः सार्द्धं शनिः सार्द्ध द्वयंस्मृतः ॥२१॥

तथा सपादद्विदिनं राशौ तिष्ठति चन्द्रमाः ।
ग्रहाणां राशिसंभोगमेवमुक्तं विचक्षणौ ॥२२॥

अर्थः—एक माह तक शुक्र बुद्ध और रवि, डेढ़ माह तक मंगल, १ साल तक गुरु, डेढ़ साल तक राहू और ढाई साल तक शनि, एक राशि पर रहते हैं ॥२१॥ उसी प्रकार सवा दो दिन तक चन्द्रमा एक राशि पर रहता है, इस प्रकार गृहों के राशि का भोग विद्वानों ने कहा हैं ॥२२॥

चन्द्रमा की द्वादश राशियों का फल—

आद्यैचन्द्रः श्रियं कुर्यान्मनस्तोयं द्वितीयके ।
तृतीये धनसंपत्तिश्चतुर्थे कलहागमः ॥२३॥

अर्थः—यदि प्रथम स्थान में चन्द्रमा हो तो धन का लाभ, दूसरे में हृदय में खुशी, तीसरे में धन-सम्पति की प्राप्ति, चौथे में क्लेश होना ॥२३॥

पंचमे ज्ञानवृद्धिश्च षष्ठे संपत्तिरुत्तमा ।
सप्तमे राजसन्मानं मरणं चाष्टमे तथा ॥२४॥

पांचवें में बुद्धि का विकास, छटे में श्रेष्ठ सम्पत्ति, सातवें में आदर, आठवे में मृत्यु होती है ॥२४॥

नवमे धर्मलाभश्च दशमे मानसे प्सितं ।
एकादशे सर्वलाभं द्वादशे हनिरेव च ॥२५॥

नवमें में धर्म का लाभ, दशवें में मनोरथ की सिद्धि, ग्यारहवें में सम्पूर्ण वस्तुओं का लाभ, बारहवें में होने से क्षति होती है ॥२५॥

हरिद्वयंमैत्रहस्तौ मृगाश्वौ चादितिद्वयम् ।
यात्रायां रेवती शस्ता निन्द्यार्द्रा भरणीद्वयं ।२६
मघा चित्रा विशाखाचसर्पश्चान्ये च मध्यमाः ।
सर्वदिग्गमने हस्तपूषा च श्रवणोमृगः ॥२७॥
सर्वसिद्धिकरःपुष्यो विद्यायां च गुरुर्यथा ॥२८॥

अर्थः--श्रवण, धनिष्ठा, अनुराधा, हस्त, मृगशिरा, अश्विनी पुनर्वसु, पुष्य और रेवती यह नक्षत्र गमन करने के समय शुभ हैं। एवं आर्द्रा, भरणी कृत्तिका, मघा, चित्रा, विशाखा, अश्लेषा यह नक्षत्र अशुभ होते हैं, तथा अन्य दूसरे नक्षत्र साधारण कहे गये हैं। सभी दिशाओं में गमन के समय, हस्त

पुष्य, श्रवण, और मृगशिर नक्षत्र शुभ हैं ॥२६-२७॥ किन्तु जिस प्रकार विद्या में गुरु सम्पूर्ण सिद्धि कारक होते हैं, उसी प्रकार पुष्य नक्षत्र सर्व मंगल कारक होता है ॥२८॥

वर्ग विचार और लग्नज्ञान

अ इ ऊ ए गरुड़ १, क ख ग घ ङ विलाव २,
च छ ज झ ञ सिंह ३, ट ठ ड ढ ण श्वान ४,
त थ द ध न सर्प ५, प फ ब भ म मूषक ६,
य र ल व मृग ७, श ष स ह मेष ८ ॥२६॥

अर्थः—कुल ८ वर्ग होते हैं, गरुण, विलाव, सिंह, श्वान, सर्प, मूषक, मृग और मेष। जिस व्यक्ति के नाम का प्रथम अक्षर यदि अ, इ, ऊ, ए, इन में से हो तो उसका गरुण वर्ग होगा, अतः इसी प्रकार अन्य शेष वर्ग भी समझने चाहिए ॥२६॥

स्ववर्गात् पंचमे शत्रुश्चतुर्थे मित्रसंज्ञकः ।
उदासीनस्तृतीये स्याद्वर्गभेदस्त्रिधोच्यते ॥३०॥

अर्थः—अपने वर्ग से पाँचवां वर्ग दुश्मन होता है, जैसे गरुण का पांचवा सर्प दुश्मन है, और चौथा दोस्त जैसे गरुण का श्वान, एवं तीसरा साधारण होता है, इस तरह वर्ग में तीन प्रकार के भेद कहे गए हैं ॥३०॥

द्विजन्मनिपंचामसप्तमगातुश्चरष्टमद्वादशधर्मयुताः
धनधान्यहिरण्यविनाशकरारविराहुशनैश्चरभूमि

सुताः । मीनाजौसार्धतिस्रःस्युर्घट्यः पादोनपंचकः
वृषकुंभौ तथाज्ञेयः पादोनषट्पराणि च ॥३२॥

अर्थः—रवि, राहू, शनि और मंगल ५वीं, ७वीं, चौथी, आठवीं और बारहवीं राशि पर द्विजन्मों के होने से पैसा, अनाज एवं स्वर्ण का नाश करते हैं ॥३१॥

अर्थः—मेष, मीन लग्न ३॥ घड़ी वृष, कुम्भ लग्न ४॥। घड़ी, और वाकी सब लग्न पौने ६ घड़ी रहती हैं ॥३२॥

कालवास विचार वर्णनम्—

अर्कोत्तरे वायुदिशों च सोमे ।
भौमे प्रतीच्यां बुधनैॠते च ॥
याम्ये गुरौ वह्निदिशांच शुक्रे ।
मन्दे च पूर्वं प्रवदन्तिकालम् ॥३३॥

अर्थः—उत्तर में रविवार को, वायव्य में चन्द्रवार को, पश्चिम में गुरुवार को, अग्निकोण में शुक्रवार को और पूर्व में शनिवार को काल का योग रहता है। काल-योग के सन्मुख यात्रा नहीं करनी चाहिए ॥३३॥

राशियों के स्वामी वर्णन—

मेषवृश्चिकयोर्भौमः शुक्रो वृषतुलाधिपः ।
बुधःकन्यामिथुनयोःप्रोक्तः कर्कस्यचन्द्रमा ॥३४।

अर्थः-राशियों के स्वामी नीचे लिखे अनुसार होते हैं। मेष, वृश्चिक का मंगल; वृष, तुला का शुक्र; कन्या, मिथुन का बुध; कर्क का स्वामी चन्द्रमा कहा गया है ॥ ३४ ॥

जीवो मीनधनुःस्वामी शनिर्मकरकुंभयोः।
सिंहस्यधिपतिःसूर्यःकथितोगणकोत्तमैः ॥३५॥

अर्थः मीन धन का गुरु; मकर, कुम्भ का शनि; एवं सिंह का सूर्य होता है, यह विद्वानों का कहना है ॥ ३५ ॥

ववश्च बालवश्चैव कौलवस्तैतिलस्तथा ।
गरश्च वणिजोविष्टिःसप्तैवकरणानि च ॥३६॥

अर्थः-सात करण होते हैं, वव यालव, कोलव, तैतिल, गर वणिज, विष्टि, ॥ ३६ ॥

शुक्रे नंदा बुधे भद्रा शनौ रिक्ता कुजे जया ।
गुरो पूर्णातिथिर्ज्ञेया सिद्धियोगाः शुभेशुभाः।३७

अर्थः-शुक्रको नन्दा, बुधवार को भद्रा, शनिवार को रिक्ता, मंगलवार को जया और गुरुवार को पूर्ण तिथि हो तो अत्यन्त शुभ सिद्धि का योग रहता है ॥ ३७ ॥

अथ दिनमान विचारः—

त्र्यं गुलं शंकुमादाय छायारामसलन्विता ।
चतुःषष्ठिर्हरेद्भागं लब्धंघटिपलात्मकम् ॥३८॥

अर्थः—लगभग ३ अंगुल शंकु लेकर छाया को नापे फिर उसमें ३ का योग करे, जो संख्या हो उसको ६४ में भाग देना चाहिए, जो प्राप्त हो उसे घड़ी मानिए एवं बाकी में ६० का गुणा करिये, फिर उसी अंक का भाग पीजिये तथ उसके प्राप्तङ्क को ही पल मानिए ॥ ३८ ॥

स्त्री को नवीन वस्त्र धारण करने का मुहूर्त—

हस्तादिपंचकेऽश्विन्यां धनिष्ठायां च पूषणि ।
गुरौशुक्रे बुधे वारे धार्यं स्त्रीभिर्नवाम्बरम् ॥३६॥

अर्थः—हस्त नक्षत्र पहिले के पांच नक्षत्र तथा अश्विनी, धनिष्ठा और रेवती नक्षत्र में गुरु, शुक्ल, एवं बुधवार को नारियों को नवीन कपड़े पहनना उचित है ॥ ३६ ॥

अथ पुरुष नवीन वस्त्र धारण मुहूर्त—

लग्ने मीनेच कन्यायां मिथुने च वृषे शुभः ।
पौषणे पुनर्वसुद्वंदे रोहिण्युत्तर भेषु च ॥४०॥

अर्थः—उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपदा, रेवती, पुर्नवसु, पुष्य तथा रोहिणी नक्षत्रों में पुरुषों को नवीन कपड़े पहनना श्रेष्ठ है ॥४०॥

अथ नवान्न भोजन मुहूर्त—

नवान्नभोजनेग्राह्यं वस्त्रे प्रोक्तमशेषतः ।
वराधिकार्सूर्य सोमो नक्षत्रः श्रवणो मृगः ॥४१॥

अर्थः—नवीन अन्न पाने के लिए, वह सब मुहूर्त शुभ हैं जो ऊपर नवीन वस्त्र पहनने के लिए बताये गये हैं, एवं श्रवण, मृगशिरा नक्षत्रों में रवि और सोमवार को भी नवीन अन्न पा सकते हैं ॥४१॥

अथ पंचक कथनम्

धनिष्ठादि पंचकं त्याज्यं तृणकाष्ठादिसंग्रहे ।
त्याज्यादक्षिणदिग्यात्रा गृहच्छादनमेव च ॥४२॥

अर्थः—धनिष्ठा, शतभिषा आदि यह पांच नक्षत्र पंचक कहे गये हैं। इन नक्षत्रों में तिनके तथा लकड़ी इकट्ठी नहीं करनी चाहिये। घर को बनवाना, घर पर छप्पर डलवाना एवं दक्षिण दिशा में यात्रा करना अशुभ होता है ॥४२॥

तेल लगाने का विचार और परिहार कथन—

तैलाभ्यंगे रवौ तापः सोमे शोभा कुजे मृतिः ।
बुधे धनं गुरौहानि शुक्रे दुःखं शनौ सुखम् ॥४३॥

अर्थः—रविवार को तेल का उपयोग करने से बुखार, सोमवार को सुन्दरता, मंगल को मृत्यु, बुध को धन-लाभ, गुरुवार को नुक़सान, शुक्र को क्लेश और शनि को आनन्द की प्राप्ति होती है ॥४३॥

रवौ पुष्पं गुरौ दुर्वा भौमवारे च मृत्तिका ।
गोमयं शुक्रवारे च तैलाभ्यंगे न दोषभाक् ॥४४॥

अर्थः—इतवार को तेल में फूल, गुरुवार को घास, मंगल को मृत्तिका, शुक्रवार को गाय का गोबर डाल कर तेल लगाने से ज्वर नहीं रहता ॥४४॥

मृत्युप्रद योग वर्णन—

नन्दा सूर्ये च भौमे च भद्रा भार्गवचंद्रयोः ।
बुधेजया गुरौरिक्ता शनौपूर्णा च मृत्युदा ॥४५॥

अर्थः—यदि इतवार और मंगलवार को रिक्ता और शनिवार को पूर्ण तिथि हो तो यह योग मृत्युकारक होता है ॥४५॥

एक संग यात्रा का भेद वर्णन—

पितापुत्रौ न गच्छेतां न गच्छेद् भ्रातरद्वयम् ।
नवांगनास्त्रयो विप्रा न गच्छन्तु तथैव च ॥४६॥

अर्थः—बाप और बेटे को, दो खास भाइयों को, नौ नारियों को एवं तीन ब्राह्मणों को एक साथ कहीं गमन नहीं करना चाहिये ॥४६॥

अमृतसिद्धयोग वर्णन—

हस्तः सूर्ये मृगः सोमे वारे भौमे तथाश्विनी ।
बुधे मैत्रगुरौ पुष्यो रेवती भृग नन्दने ॥४७॥

रोहिणी रविपुत्रै च सर्वसिद्धिप्रदायकाः ।
अयंचामृतसिद्धिःस्याद्योगःप्रोक्तः पुरातनै ॥४८॥

अर्थः—प्राचीन विद्वानों ने अमृत सिद्धि नामक योग अत्यन्त सिद्धि दायक बताया है, और यह योग रवि को हस्त, सोमवार को मृगशिरा तथा मंगलवार को अश्विनी, बुधवार को अनुराधा, गुरु को पुष्य, शुक्र को रेवती तथा शनिवार को रोहिणी नक्षत्र होने से होता है ॥ ४७, ४८ ॥

अथ ग्रामवासफलवर्णनम्—

ग्रामस्य च भवेद्धृक्षंतदाद्याः सप्त मस्तके ।
पृष्ठे सप्त हृदि ह्येवं पादयोः सप्त तारका ॥४९॥

अर्थः—गाँव के नक्षत्र के पहिले सात नक्षत्र सर पर रखे, पीठ पर सात, हृदय पर सात और पैरों पर सात रखे ॥४९॥

मस्तके च धनी मान्यः पृष्ठे हानिश्च निर्धनः ।
हृदये सुखसंपत्तिः पादे पर्यटनं भवेत् ॥५०॥

अर्थः—यदि वर्तमान नक्षत्र सर पर हो तो धनी और पूजनीय होता है, पीठ पर होने से क्षति और दरिद्रता प्राप्त होती है, मन पर होने से सुख सम्पति का लाभ, पैरों पर होने से भ्रमण शील होता है ॥५०॥

अन्य मत से ग्रामवास फल वर्णन—

ग्रामस्यभं समारभ्य सूर्यभं यश्च तिष्ठति ।
पंचमे द्वादशे वापिचेकोनविंश विंशयोः ॥५१॥
एकविंशश्चतुर्विंशत् षष्ठाविंशस्तथैव च ।
एतानिसप्तऋक्षाणिग्रामेनासुखदायकम् ॥५२॥

अर्थः—ग्राम के नक्षत्र से आरम्भ कर सूर्य के नक्षत्र तक गिनती करे। ५वां, १२वां, १६वां, २०वां, २१वां, २४वां, और २६वां, यदि इन सात नक्षत्रों का ग्राम में वास हो तो सुखकर नहीं होता ॥ ५१-५२ ॥

अथ वधू-प्रवेश मुहूर्तः—

हस्तत्रयेब्रह्मयुगे मघायां पुष्यधनिष्ठा श्रवणोत्तरेषु
मूलानुराधाहयरेवतीषु स्थिरेषु लग्नेषुवधूप्रवेशः ॥

अर्थः—नीचे लिखे नक्षत्रों की स्थिर लग्न में वधू का प्रवेश उचित है, हस्त से ३नक्षत्र, रोहिणी, मृगशिरा, मघा, पुष्प, धनिष्ठा श्रवण, तीनों उत्तरा, मूल, अनुराधा, अश्विनी और रेवती ॥ ५३ ॥

... रोगी को स्नान कराने का मुहूर्त

आश्लेषा द्वितयं स्वाती रोहिणी च पुनर्वसुः ।
रोगिस्नाने रेवती च वर्जयेदुत्तरात्रयन् ॥५४॥

अर्थः—स्नान कराने के लिये, आश्लेषा, मघा, स्वॉती, रोहिणी पुनर्वसु, रेवती और तीनों उत्तरा ये नक्षत्र निषेध हैं ॥ ५४ ॥

रिक्ता तिथो चरे लग्ने वारे च रवि भौमयोः ।
स्नानं च रोगिणांप्रो क्तंद्विजभोजनसंयुतम् ॥५५॥

अर्थः—खाली तिथि, चर लग्न, रविवार और मंगलवार को ब्राह्मण को भोजन कराकर रोगी को स्नान कराना उचित है ॥५५॥

षष्ठीषुतैलंपलमष्टमीषु क्षौरक्रियानैवचतुर्दशीषु ।
स्त्रीसेवनंनष्टकलासुपुं सामायुःक्षयार्थमुनयोवदंति

अर्थः—षष्ठी को तेल, आठें को मांस उपयोग नहीं करना चाहिए, चौदस को बाल तथा अमावस्या को स्त्री सेवन नहीं करना चाहिए जो इसके विपरीत करते हैं उनकी आयु क्षीण हो जाती है ॥ ५६ ॥

❀ प्रस्तान में वस्तु रखने का विधान ❀

यज्ञोपवीतकं शस्त्रं मतुञ्च स्थापयेत्फलम् ।
विप्रादिक्रमतःसर्वस्वर्णधन्याम्बरादिकम् ॥ ५७ ॥

अर्थः—ब्राह्मण को प्रस्थान के समय जनेऊ (यज्ञोपवीत) क्षत्री को हथियार, वैश्य को मिठाई एवं शूद्र को फल रखना श्रेयस्कर है। सोना कपड़ा तथा धान्य प्रत्येक रखे ॥ ५७ ॥

प्रस्थान में दिन प्रमाण दर्शन—

राजादशाहे पञ्चाहमन्योपि प्रथितो वसेत् ।
अंगप्रस्थान सम्पूर्ण वस्तुप्रस्थानमर्द्धकम् ॥५८॥

अर्थः—यदि राजा प्रस्थान करे तो १० दिन तथा औरों को ५ दिन तक मुहूर्त्त शुभ रहता है, तदनन्तर वह मुहूर्त्त नष्ट हो

जाता है। स्वयं स्थान छोड़ कर प्रस्थान में रहे तो मुहूर्त्त का पूर्ण फल प्राप्त होता है, और वस्तु के प्रस्थान में रखने से मुहूर्त्त का आधा ही फल मिलता है ॥५८॥

अङ्ग फड़कने का फलाफल वर्णन—

पृथ्वीलाभो भवेन्मूर्ध्नि ललाटे रविनन्दन।
स्थानवृद्धिं समायाति भ्रू नसोः प्रियसंगमः ॥५६॥

अर्थः—यदि मस्तक फड़के तो पृथ्वी-लाभ, ललाट से जगह का बढ़ना और भौंह से अपने प्रिय से भेंट ॥५६॥

मृत्युलब्धिश्चाक्षिदेशे दृगुपान्ते धनागमः।
उत्कण्ठोपगमे मध्येदृष्ट राजन्विचक्षणैः ॥६०॥

अर्थः—अक्षि देश से मृत्यु, नेत्र से धन- प्राप्ति, और कष्ट से राज्य लाभ जानना चाहिये ॥६०॥

दृग्बन्धने संगरे च जयं शीघ्रमवाप्नुयात्।
योषिल्लाभोऽपाँगदेशेश्रवणान्तेप्रियश्रुति ॥६१॥

अर्थ—दृग्बन्धन से युद्ध में जीत, अपांग देश से स्त्री की प्राप्ति, कान से प्रिय का समाचार ॥६१॥

नासिकायाँ प्रीतिसौख्यं प्रियाप्तिरधरौष्टयोः।
कंठेतुभाग्यलाभःस्याद्भोगवृद्धिरथाँसयोः ॥६२॥

अर्थः—नाक से प्रीति और सुख, होठ से प्रिय वस्तु की प्राप्ति, कण्ठ से भाग्य-लाभ, और कन्धे से भोगों का बढ़ना ॥६२॥

सुहृच्छेष्टश्च बाहुभ्याँ हस्ते चैव धनागमः ।
पृष्ठे पराजयोत्सेधोजयोवक्षः स्थलेभवेत् ॥६३॥

अर्थः—भुजाओं से मित्र का मिलना, हाथ से धन का लाभ, पीठ से हार, वक्षस्थल से जीत होती है ॥६३॥

कुक्षिभ्याँप्रीतिरुद्दिष्टास्त्रियाः प्रजननं भगे ।
स्थानभ्रंशोनाभिदेशेअन्येचैवधनागमः ॥ ६४ ॥

अर्थः—कोख से प्रेम, इन्द्रिय से सन्तान-प्राप्ति, नाभि से जगह का नाश होना, आंतों से धन का लाभ होता हैं ॥६४॥

जानुसधौ परैः सन्धिर्वलवद्भिर्भवेन्नृपः ।
एकदेशेभवेत्स्वामी जंघाभ्यां रविनंदन ॥ ६५ ॥
उत्तमंस्थानमाप्नोति पद्भ्याँ प्रस्फुरणे नृप ।
अलाभश्चाध्वगमनं भवेत्पादतले नृप ॥ ६६ ॥

अर्थः—जाँघ और कोख से विजय। पैर फड़कने से अच्छे स्थान की प्राप्ति, पैर का तलवा फड़कने से हानि, और यात्रा होती है ॥६५-६६॥

लाञ्छनं पीठकं चैव ज्ञेयं स्फुरणवत्तया ।
विपर्ययेण विहितः सर्वस्त्रीणां विपर्ययः ॥६७॥

अर्थः—स्त्रियों को भृकुटि के बीच, और पीठ से पुरुष के समान ही फल मिलता हैं। किन्तु शेष अंगों से विपरीत फल होता है ॥६७॥

प्रभात प्रिंटिंग प्रेस, कृष्णा टोला, अलीगढ़।

—❖ त्रिकालज्ञ ज्योतिषी ❖—

(लेखक—स्वामी रामानन्दजी सरस्वती)

यह ग्रंथ बड़े कष्ट से प्राप्त कर प्रकाशित किया है। यदि यह पण्डितों के पास हो तो कदापि प्रजा को यह कहने का मौका नहीं मिल सकता कि कोई फल मिलता है या नहीं मिलता। इस ग्रंथ में फल कहने की उन छिपी हुई युक्तियों का वर्णन है कि जिन्हें पुराने ज्योतिषी शिष्यों की तो बात ही क्या प्राण प्रिय पुत्र को भी अधिकारी पाकर अन्त में बताया करते थे। इसके द्वारा हिन्दी भाषा जानने वाला मनुष्य थोड़े ही दिनों में प्रसिद्ध ज्योतिषी बनकर अतुल धन और अक्षय कीर्ति पैदा कर सकता है। होनहार का हाल कहना, जन्म-पत्र बनाना तथा उनके बारहों घरों और ग्रहों का पूरा २ फल कहना, जन्म-पत्री बनाना, विवाह के समय लड़के लड़की की विधि मिलाना, स्त्री पुरुष का जन्म-पत्र जानने का ज्ञान करना, सिर्फ कुण्डली देखकर जन्म का सम्वत और मास, तिथि और दिन जानना, जन्म समय पर स्त्री पुरुष आदि की मौजूदगी का ज्ञान, सूर्य चन्द्रमा आदि ग्रहों का स्पष्ट करना तथा उनकी चाल दृष्टि, भाव स्पष्ट प्रश्नोत्तरी बनाना, मुहूर्तों का ज्ञान, वर्षफल बनाना, मूक प्रश्नों का ठीक २ उत्तर देना, भविष्य फल कहना, गणित और फलित ज्योतिष के तमाम गूढ़ रहस्यों को ऐसी सरल सुबोध भाषा में समझाया है कि थोड़ा लिखा पढ़ा मनुष्य भी पूरा ज्योतिष का ज्ञान प्राप्त कर सकता है। पुस्तक उपादेय है और हर एक गृहस्थियों तथा ज्योतिष विद्या से प्रेम रखने वाले पण्डितों के काम की है। मूल्य केवल ४) डाक महसूल ।।-)